समाज सुधार में महात्मा ज्योतिबा फुले का योगदान (1827–1890)

Dr.VinayKumar

Dept.of History.

Govt College for Women Madlauda .

शोध–आलेख सार:–

19वीं सदी में भारत में अंग्रेजों की नई शिक्षा प्रणाली से एक नया शिक्षित वर्ग पैदा हुआ, उसमें से कुछ लोगों का ध्यान भारतीय समाज की कुरीतियों की ओर केन्द्रित हुआ जिनमें महात्मा ज्योतिबा फुले का अग्रणीय स्थान है जिन्होंने समाजनीति, राजनीति, अर्थनीति, धर्मनीति, शिक्षा, स्त्री–पुरुष, समानता और सामाजिक न्याय इत्यादि क्षेत्रों में अपने विचार और नए मूल्य स्थापित किए महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा किए गए समाज सुधार हेतु कार्य का विश्लेषण प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

जीवन परिचय

महात्मा ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत में दलितों व महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था के लिए तथा मजदूरों, किसानों व समाज के कमजोर वर्ग की उन्नति के लिए चलाए गए सशक्त आन्दोलनों के लिए आज के जनमानस में मानवतावाद के प्रेरक है। सदियों से भारतीय समाज सर्वाधिक निन्दनीय पक्ष जातिगत बन्धन से जकड़ा रहा है जिससे सामान्यत: जन्म के आधार पर ही थोपा जाता था। इस जातीय अभेद किले की दीवारों को तोड़ने का कार्य करने वाले महापुरुष का जन्म सन् 1827 में पूना (महाराष्ट्र) में माता चिमना बाई व पिता गोविन्द राव जी के घर हुआ।[1] जब ज्योतिबा फुले केवल 1 वर्ष के थे तभी उनकी माता का देहान्त हो गया। ज्योतिबा फुले बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे जिससे प्रभावित होकर पिता गोविन्द राव बालक ज्योतिबा फुले को स्कूल में दाखिला दिलाने के बारे में सोचने लगे यद्यपि ऐसे अन्धकारपूर्ण युग में गोविन्दराव फुले ने अपने पुत्र को पढ़ाने का साहस दिखलाया जब केवल कुलीन परिवारों के लिए ही शिक्षा के दरवाजे खुले थे। गोविन्द राव ने पुत्र ज्योतिबा फूले को

7 वर्ष की आयु में प्रारम्भिक शिक्षा हेतु मराठी स्कूल में दाखिला दिलवाया। जब वे पढ़ना-लिखना सीख ही रहे थे कि बॉम्बे के कट्टरपंथी नेता ढाकजी दादा जी प्रभु के इशारे पर जो बॉम्बे के नेटिव ऐज्यूकेशन सोसायटी के सर्वेसर्वा थे।[2] उन्हें अपनी शिक्षा-दीक्षा बीच में ही छोड़नी पड़ी इस घटना ने उनके बाल-मन को अन्दर से ही झिंझोड़ कर रख दिया तथा पिता के साथ फूल उत्पादन के कार्य में लग गए। गोविन्दराव जो ज्योतिबा फूले का विवाह (1840) में जो कि उस समय 13 वर्ष के थे सतारा जिले में खण्डाला तहसील के नयागाँव के खण्डोजी नेवासे पाटिल की कन्या सावित्री बाई जो कि 9 वर्ष की थी से कर दिया।[3]

विवाह के उपरान्त भी ज्योतिबा फूले ने पढ़ाई बन्द नहीं की अपितु घर पर ही शिक्षा को सुचारूरूप सेचलने दिया। पढ़ाई के प्रति विशेष अनुराग से प्रभावित होकर ज्योतिबा के दो पड़ोसी विद्वानों ने जिनमें एक गुफ्फार बेग मुंशी जो उर्दू व फारसी के अध्यापक थे तथा दूसरे लेजिट नामक क्रिश्चियन जो सरकारी अधिकारी और मिशनरी थे उन दोनों ने पिता गोविन्द राव को बाद ज्योतिबा के उज्ज्वल भविष्य के लिए पुनः स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए मना लिया जिसके परिणामस्वरूप सन् 1841 में 14 वर्ष के ज्योतिबा को मिशन स्कूल में दालिख दिलाया गया। जहाँ उसकी मित्रता सदाशिव व लाल गोवाण्डे, सखाराम यशवन्त परांजपे, मोरो विट्ठल वालवेकर से हुई। बालक ज्योतिबा ने स्कॉटिश मिशन स्कूल में जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी, थामस पेन की महान पुस्तक ''राइट्स ऑफ मैन'' का अध्ययन किया।[4] सन् 1847 में ज्योतिबा ने अंग्रेजी स्कूल की पढ़ाई पूरी की। इस दौरान अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम ने ज्योतिबा फूले के मन में मानवता की समानता, मानव के अधिकार एवं मानव के स्वतन्त्रता के विचारों को जन्म दिया तथा भारत में भी वे राष्ट्रीय चेतना का ताना बाना बुनने लगे। 1848 के आरम्भ में मित्र की बारात में जातीय कट्टरपंथियों द्वारा अपमानित किए जाने पर उन्होंने कट्टरतावादी समाज व्यवस्था

को ध्वस्त करके तथा स्वतन्त्रता, भाईचारा और सामाजिक न्याय पर आधारित व्यवस्था निर्माण पर बल दिया जिससे वे आगे चल कर महान् क्रान्तिकारी, समाज सुधारक बने।

समाज सुधारक के रूप में:-

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का समय भारतीय समाज के लिए पुनर्जागरण का काल माना जा सकता है क्योंकि साहित्य में अनेक नए रूपों और नवीन विषय-वस्तु का समावेश हुआ, पत्रकारिता के नए आयाम मिले जिसे जन-मानस में समाज-सुधार के आन्दोलन हुए परन्तु सामाजिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी बदलाव ना होकर बहुत परिवर्तन हुए इस समय शक्तिशाली व प्रभावशाली सामाजिक आन्दोलन के अग्रदूत के रूप में महात्मा ज्योतिबा फुले का भारतीय इतिहास में प्रवेश हुआ और उन्होंने वर्ण-व्यवस्था, जाति-प्रथा को अमान्य करार दिया। महिलाओं, शूद्रों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोल दिए जो केवल कुलीन लोगों के अधिकार क्षेत्र में आते थे। 24 सितम्बर 1873 में उन्होंने ''सत्यशोधक समाज''[5] की स्थापना की। जिसमें उनके तीन ब्राह्मण मित्र विनायक बापूजी भण्डारकर, विनायक बापूजी डेगले और सीताराम सखाराम दातार की मुख्य भूमिका रही जोतीराव सामाजिक क्रान्तिकारी नेता के लिए एक संस्था (सत्यशोधक समाज) की आवश्यकता थी, जो उनके आदर्शों तथा मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु एक अधिकृत प्लेटफार्म बना सके जो उन्होंने सत्यशोधक समाज के माध्यम से प्राप्त हुआ।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज के माध्यम से जनसभायें, पर्चे के माध्यम से, लघु पुस्तिकाएँ वितरित करके बच्चों की शिक्षा, बुरी रीति-रिवाज, अन्यायपूर्ण धारणाएँ, ईश्वर के नाम पर लुट-खसोट व दलितों, शोषितों के शोषण का विरोध किया। जिसे सत्य-दीपिका, सुबोध-पत्रिका, प्रमोद सिंधु, और इंदुप्रकाश नामक समाचार-पत्र ज्योतिबा फुले के विचारों और कार्य और उद्देश्य की प्रशंसा करते है[6] जो उनके द्वारा एक नई चेतना का प्रथम प्रसार था। जो उन्हें आगे एक क्रान्ति का अग्रदूत बनाने वाला था। ज्योतिबा फुले के विचारों तथा उद्देश्य से

प्रभावित होकर बम्बई के प्रसिद्ध ठेकेदारों व्यांकू कालेवर, और जया कराडी लिंगू ने वादा किया कि वे ब्राह्मण दावत पर खर्च होने वाले धन को अब से गरीबों के उत्थान व शिक्षा की उन्नति के लिए सत्यशोधक समाज को देंगे।[7] जहाँ तक कि ज्ञानोदय पत्रिका[8] ने लिखा कि

''अनेक संभ्रांत, धनवान दयालु हृदय वाले दानी धन, प्रिंटिंग प्रैस व अन्य चीजें देने के लिए आगे आ रहे हैं जो इस बात का द्योतक था कि हिन्दु समाज में कितना परिवर्तन आ गया है'' महात्मा ज्योतिबा फुले ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध भी तेजी से विद्रोह किया तथा उन कुरीतियों का उन्मूलन हेतु सदा अग्रसर रहे उन्होंने अपने भाषणों से एवं पर्चे, फोल्डर्स, पैम्फलैट्स वितरित कराकर, जनमानस की चेतना को जागृत करने का वातावरण तैयार किया इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम विधवा विवाह को प्रोत्साहन किया तथा पूना के गोखले बाग में 8 मार्च 1860 को[9] एक ब्राह्मण विधवा युवती नर्मदा का उसकी जाति के विधुर रघुनाथ जनार्दन के साथ विवाह कराया था। विवाह के समय उस विधवा की आयु 18 वर्ष थी। महात्मा ज्योतिबा फुले का कथन था कि जब ब्राह्मण समाज का विधुर दूसरी शादी कर सकता है तो उनकी विधवा बालिका या स्त्री दूसरी शादी क्यों नहीं कर सकती है। महिलाओं के साथ ये भेदभाव क्यों है।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने महिलाओं की भलाई के लिए बाल विवाह का विरोध किया तथा मलाबारी के अंग्रेज सरकार से प्रार्थना की। 19 वर्ष से कम आयु के लड़के एवं 11 वर्ष से कम आयु की लड़की के विवाह की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।[10] जिसके लिए उनकी तत्कालीन समाज सुधारक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, व दादा भाई नारौजी ने भी समर्थन किया। महात्मा ज्योतिबा फुले ने समाज में व्याप्त घृणित सती प्रथा पर भी आघात किया तथा इसे अत्याचार की पराकाष्ठा माना और इसकी निन्दा की। बाद में अंग्रेज सरकार ने 1829 में इस अमानवीय प्रथा पर कानून बनाकर रोक लगा दी। महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा बाल हत्या

प्रतिबन्धक गृह की स्थापना की क्योंकि तरूण विधवाओं के साथ अनैतिक आचरण की घटनाएँ समाज में आम हो गई थी क्योंकि चरित्रहीन पुरुष भोली-भाली विधवा स्त्रियों को बहला-फुसलाकर अनैतिकता में शामिल कर लेते थे। उनके अनैतिक आचरण से बच्चे पैदा हो जाते थे जिन्हें वे लोकसमाज के भय से कूढ़े के ढेर में या नदी नाले में फैंक देती थी। विधवाओं की इस मजबूरी को समझकर महात्मा फुले ने अपने घर में ऐसी विधवाओं के बच्चों के लिए ''बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह''[11] की 1863 में स्थापना की। लोकहितवादी गोपाल राव देशमुख, विनायक राव भण्डारकर, प्रार्थना समाज के न्यासी लोग, मदन श्री कृष्ण जो लघुवाद न्यायालय के न्यायाधीश थे, मामा परमानन्द, वासुदेव राव बाबाजी नौरंग, तुकाराम तांत्या पड़वाल इत्यादि महानुभावों ने फुले जी के बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह और विधवा आश्रम के कार्य की सराहना की तथा सहायता प्रदान की।

ज्योतिबा फुले से प्रेरित होकर रानाडे व उनके मित्र लालशंकर उमा शंकर त्रिवेदी ने 1875 में पढंरपुर में अनाथालय खोला[12] जो फुले जी की समाज सुधारक मुहीम का परिणाम था। ज्योतिबा फुले जी ने सदा समानता पर बल दिया तथा समाज में इसे लागू करने व ऊँच-नीच के भेद को दूर करने के लिए उन्होंने अपने घर में पानी के हौज को सभी वर्गो के लिए 1868 में खोल दिया।[13] यहाँ तक कि उन्होंने अछूतों के साथ भोजन करना आरम्भ कर समाज को नई तथा सार्थक दिशा देने का प्रयास किया तथा सन्तान न होने पर काशीबाई नामक विधवा स्त्री के शिशु को गोद लेकर समाज को नया संदेश दिया। 27 नवम्बर 1890 को प्रात: काल 2 बजे 20 मिनट पर उनकी हृदय की धड़कन बंद हो गई वे चिर निद्रा में सो गए।[14] समाज को ऐसा झटका लगा जैसे कि यशवन्त के साथ-साथ वे भी अनाथ हो गए।

उपसंहार

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ज्योतिबा राव फुले जिन्हें लोग आदर से ''महात्मा फुले'' या महात्मा ''ज्योतिबा फुले'' कहते थे का जन्म महाराष्ट में हुआ जिन्होंने अपने प्रयासों से समाज, राजनीति, अर्थनीति, धर्मनीति, शिक्षा, स्त्री-पुरुष समानता और सामाजिक न्याय इत्यादि क्षेत्रों में नए आदर्श व मूल्य स्थापित किए। इन क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए कार्य ऐतिहासिक और क्रान्किारी तो है ही, साथ ही समाज की रचना को नया आयाम देने वाले भी थे जिसके कारण महात्मा ज्योतिबा फुले आधुनिक भारत में प्रथम भारतीय थे जिन्होंने समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक आन्दोलन का सूत्रपात किया। वे वर्ण व्यवस्था, जातिभेद, ग्रामीण कुनबी किसानों, खेतिहर मजदूरों, शुद्रादि-अतिशूद्रों एवं नारी के हितों के लिए सदा संघर्ष करते रहे और 19वीं शताब्दी में एक शक्तिशाली आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए दलितों और महिलाओं के लिए सदियों से बंद पड़े शिक्षा के दरवाजे खोले क्योंकि वे जानते थे कि समाज में बदलाव शिक्षा द्वारा ही लाया जा सकता है जिससे वे गरिमापूर्ण जीवन जी सकते हैं इसलिए उन्होंने शिक्षा के प्रसार तथा समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे बाल-विवाह, बाल हत्या, सती प्रथा, विधवा महिलाओं की दयनीय दशा, छुआ-छूत इत्यादि सामाजिक बुराईयों पर कड़ा प्रहार किया।

वास्तव में महात्मा ज्योतिबा फुले ने भारतीय राजनीतिक क्रान्तिकारी आंदोलन की उपेक्षा एक समाज सुधारक व विचारक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जो आज के समाज में अतुलनीय है।

सन्दर्भ सूची

1. योगमाया (2004) महात्मा जोतीराव फुले दर्शन एवं चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 27
2. धनंजय कीर (1997) दी फादर ऑफ इण्डियन सोशल रिवोल्यूशन, पॉपुलर प्रकाशन, बॉम्बे, पृ. 3
3. योगमाया (2004) उपरोक्त, पृ. 28
4. वही, पृ. 28
5. नवशक्ति- 24 सितम्बर, 1872, पृ. 4
6. सत्यदीपिका समाचार-पत्र, 24 सितम्बर, 1875
7. योगमाया (2004) उपरोक्त, पृ. 65
8. धनंजय कीर (1997) पृ. 132
9. योगमाया (2004) उपरोक्त, पृ. 80
10. वही, पृ. 80
11. महात्मा जोतीबा फुले रचनावली भाग-2, एल. जी. मेश्राम विमल कीर्ति-राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 13
12. योगमाया (2004) उपरोक्त, पृ. 81
13. धनंजय कीर (1997) उपरोक्त, पृ. 87
14. योगमाया (2004) उपरोक्त, पृ. 18